५२: राज्य नीति का आधार

दिनांक -१८-०१-२०१२

तन, मन, धन रुपी अर्थ का सुरक्षा व्यवस्था ही राज्य नीति का आधार है | राज्य का स्वरूप विगत में शासन के रूप में रहा है | यह कायदा, कानून के नाम से संविधान बन पाया, न्याय के रूप में संविधान बन नहीं पाया | इसे जाँचने पर पता लगता है कि विश्वव्यापी देशों में अथवा राष्ट्रों में एक-एक संविधान बना है, जिसका सीमा सुरक्षा निश्चित रहता है | शासन का आधार शक्ति से चलना ही है | शक्ति संचालन को अभी तक धनुष बाण से चलकर, तलवार से चलकरबंदूक, बन्दूक से चलकर मिसाइल तक पहुंचा है | यह सब सामरिक तन्त्र में शामिल है | आज भी इस बात का जिक्र बना रहता है | ये सब गुजरी हुई, बीती हुई प्रचलित कथन हैं | यह सब का सब शासन के अर्थ में काम किया है | शासन का आधार व्यक्तिवाद राजकुल तक रहा | उसके अनंतर सभावाद हो गया है | सभावाद भी शासन का प्रवर्तन है, संविधान इसका आधार है | जिसको व्यक्ति ने कहा वह शासन हो गया | शासन का मतलब बंदूक, बारूद चलने से ही है | ये सब चलते अभी तक व्यवस्था नहीं हो पाया | शासन व्यवस्था के नाम से सुविधा प्रधान शासन रहा है | इस शासन विधि से न्याय मिलना दूर रहा |

न्याय मिलने के क्रम में विकल्प विधि से सोच, विचार के अनुसार प्रस्तावित है इसमें यह पहचाना गया है कि वाद-विवाद में सम्मलित कम से कम दो पक्ष होते ही हैं | वाद-विवाद में सम्मलित पक्षों का सहमत होना ही न्याय है | जो निर्णय होगा वह एक से अधिक पक्षों के साथ स्वीकार होने पर न्याय है | अभी का न्यायालयों में एक का जीत एक का हार माना जाता है | वाद-विवाद स्वयं में समस्या है, उसको सुलझाना ही समाधान है | समाधान एक से अधिक पक्षों के लिये स्वीकार होता ही है | हर व्यक्ति में विचार करने की शक्ति है | यह जीवनगत वैभव है | ऐसे समाधान सभी पक्षों में कार्यशील होना ही न्याय है | न्यायपूर्वक जीने का मतलब समाधानपूर्वक जीना ही है | समाधान समझदारी पर निर्भर है | समझदारी विकसित चेतना पर आधारित है | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में ज्ञान एवं प्रमाणित होता है |

विकसित चेतना अध्ययनगम्य होने के पश्चात मानव चेतना होना सम्भव है | तभी न्याय पूर्वक जीना बनता है | जीव चेतना विधि से न्याय होता नहीं | शक्ति केंद्रित शासन विधि के अनुसार फैसला होना ही माना जा रहा है | हर फैसले को कायदा, कानून के आधार पर बताया जाता है | हर मानव शैशव काल से ही न्याय चाहता है | परम्परा में न्याय का अभ्यास न होने के कारण फैसले में सहमत हो जाता है | फैसले के पीछे बन्दूक, बारूद चलता ही है | न्याय के पीछे स्वयंस्फूर्त विधि से हर व्यक्ति चलता है | यह सोचने का मुद्दा है कि स्वयंस्फूर्त विधि से चलना सरल है या बंदूक, बारूद विधि से चलना सरल है | स्वयंस्फूर्त विधि से चलने के लिये हर मनुष्य को न्याय का समझ होना चाहिए अन्यथा चल नहीं पाते हैं | यह शिक्षा विधि से सम्भव है | शिक्षा विधि से विकसित चेतना अवगत हो पाता है | सर्व सुलभ होने के बाद ही अथवा सर्वाधिक लोगों को स्वीकार होने बाद ही समाज गति बन पाती है | अभी तक जो कुछ भी गति बना है वह समुदाय गति ही माना जा सकता है |

व्यापार विधि से या उपभोक्ता विधि से एकरूपता लाने का प्रयास जारी है | उपभोक्ता विधि से कोई न्याय मिलने का रास्ता नहीं है | हर उपभोक्ता का विधि अलग होने के कारण एकरूपता का सम्भावना क्षीण है | न्याय का एकरूपता समाधान से ही होता है | समाधान का एकरूपता सर्वदेश काल में एक समान है | इस प्रकार सर्वमानव न्यायपूर्वक जीना ही अखण्ड समाज का तात्पर्य है |

इसी विधि से चलने पर अर्थात न्यायपूर्वक चलने से ही अखण्ड समाज होना पाया जाता है | तभी मानव जाति एक होना, मानव धर्म एक होना स्पष्ट होता है | मानव जाति का आधार शरीर परम्परा है | शरीर रचना में ही नस्ल एवं रंग का प्रकाशन है अथवा अध्ययन है | इसी क्रम विधि से अनेक जाति का स्वीकृतियां अभी तक हो चुकी हैं | मानव एक जाति होने का आधार आहार, विहार, व्यवहार के रूप में ही है | आहार शरीरमूलक होने के स्वरूप में अध्ययनगम्य है | अभी तक भौतिकवाद तथा आदर्शवाद दोनों ने मानव को जीव ही कहा है | शरीर को ही जीवन मानने के आधार पर यह नाम बना है | जबकि हर मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में वर्तमान रहता है | मरने के पश्चात कोई भी आदमी वर्तमान रहता नहीं है | मरने के बाद उनके कार्यों को अथवा कार्यों का स्मरण को वर्तमान माना जाता है |

इस स्थिति में मानव परम्परागत विधि से निरंतरता को पाना सम्भव नहीं हुआ | कुछ समय के पश्चात हर व्यक्ति का कार्य व्यवहार जो दिवंगत रहता है उनका कार्य व्यवहार अथवा यश अथवा कार्यकलाप का स्मरण क्षीण हो जाता है | अभी जो विकल्पात्मक बात को सोचा जा रहा है, अभी कोई समाज गति नहीं बना है इसके बावजूद दोनों प्रकार का विचारधारा का वर्चस्व शनैः शनैः कम होता जा रहा है, इसको देखा गया है | इतना रंगा हुआ विचारधारा जब निष्प्रभावी होता गया, बाकी व्यक्ति का कार्य व्यवहार का कहना ही क्या है | मानव शरीर का अध्ययन से हम पाते हैं कि मानव शरीर रचना शाकाहारी है | इसका तीन कसौटी है |

एक- शरीर का बनावट में दाँत, नाखून का बनावट अलग अलग रहता है | शाकाहारी जीवों का शरीर का दाँत, नाखून का बनावट अलग है तथा माँसाहारी जीवों का शरीर का दाँत, नाखून का बनावट अलग है | यही प्रथम प्रभेद है | दूसरा यही है कि शाकाहारी शरीर वाले जीव ओठ से पानी पीते हैं | मासाहारी शरीर रचना वाले जीव जीभ से पानी पीते हैं | तीसरा कसौटी है- माँसाहारी शरीर रचना वाले जीवों की आँते छोटी होती हैं, शाकाहारी शरीर रचना वाले जीवों की आँते लम्बी होती हैं | इन तीनों प्रकार से अलग अलग दिखने वाली स्थिति को अध्ययन करना सम्भव है | इनमें से पहले दो भाग हर व्यक्तिके देखने योग्य है | अंतिम एक भाग शरीर को भाग विभाग करने वालों से पता लगाने वाली बात है | इस विधि से शाकाहारी, माँसाहारी शरीर का पहचान हो सकता है | इसके पश्चात चेतना की बात आती है; जिसके आधार पर विहार व व्यवहार, संस्कृति व सभ्यता के आधार पर प्रस्तुत होता है | जीव चेतना विधि से विहार, व्यवहार व्यक्तिवादी होना देखा गया है |

मानव चेतना विधि से मानव संस्कृति, सभ्यता के रूप में वर्तमान होना स्पष्ट हो गया है | इसे अभ्यास करते हुए देखा गया है | जिसमें न्याय सम्मत अभिव्यक्ति होना देखा गया है | व्यवहार ही मानव संस्कृति, सभ्यता का द्योतक हो जाता है | विहार में मानव संस्कृति, सभ्यता का महिमा प्रतिष्ठित हो जाता है | इन सभी विधाओं को जाँचने पर पता चलता है कि मानव अपने मूल रूप में मानव चेतना विधि से, मानवीयतापूर्ण मानव न्याय सम्मत विधि से आहार, विहार, व्यवहार कर पाता है अन्यथा जीव चेतना क्रम में व्यक्तिवादी, समुदायवादी ही होता है जो आज की स्थिति में सर्वदेश काल में है, चाहे भौतिकवादी हो, या आदर्शवादी हो | इससे मुक्ति पाना ही भ्रम मुक्ति है | इसके मूल में पता चलता है कि व्यक्तिवाद, समुदायवाद में शरीर को जीवन मानना आवश्यक हो जाता है | अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही इससे मुक्ति का एकमात्र रास्ता है |

इसी क्रम में तन, मन, धन रुपी अर्थ का सुरक्षा व्यवस्था दस सोपानीय विधि से परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में प्रमाणित होता है | इस ढंग से मानव चेतना में न्याय प्रधान विधि से जीना, देव चेतना में धर्म प्रधान विधि से जीना, दिव्य चेतना में सत्य प्रधान विधि से जीना ही विकसित चेतना का स्वरूप होना समझ आता है | न्याय, भाषा या आदर्श मात्र नहीं है | न्याय, ज्ञान है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)